P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उत्तराखण्ड लोक वाद्य हुड़का का ऐतिहासिक विश्लेषण

अनुराधा कोटियाल
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
कालिंदी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली, भारत

सारांश

लोक संगीत आज भी प्रकृति के उन्मुक्त एवं स्वच्छन्द वातावरण में पुष्पित व पल्लवित हो रहा है और आज भी कृत्रिमता से दूर है। लोक संगीत में गति प्रधानता होने के कारण घनवाद्य इसका प्राण है मुख्यतः लोक संगीत में वाद्यों का अधिक प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार लोक वाद्यों का लोक जीवन में महत्व बढ़ जाता है। गीत, लोक गीत नृत्य, लोक नृत्य, नृत्य नाटिका, नौटंकी, मेले उत्सव, धार्मिक उत्सव, जागर आदि सभी पारंपरिक लोक विधाएं वाद्यों पर ही निर्भर है। वाद्ययंत्रों में हमे एक राज्य स्थापित दिखाई पड़ता है। प्रत्येक राज्य के अपने लोक वाद्य होते है जो उस राज्य की लोक संस्कृति को बताते हैं जैसे ढोल को सुनते ही पंजाब प्रान्त का अनुभव होता है, नाल सुनते ही महाराष्ट्र इस प्रकार हुड़का वाद्य सुनते ही उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति सम्मुख आ जाती है।

मुख्य शब्द : लोकवाद्य, हुड़का, अतोद्य, जागर, गान्धर्व, लोकनृत्य।

प्रस्तावना

अनादिकाल से संगीत जनजीवन से संबद्ध रहा है। कई हजार वर्ष पहले जब मानव जाति असभ्य थी तब भी उसके मन में प्रकृति और जीवन सौन्दर्य के प्रति आकर्षण था तब वह अपने मन की बातों को व्यक्त करने के लिए कुछ अस्पष्ट शब्दों, इशारों और कृत्रिम ध्वनियों का प्रयोग करता था जिन्हें लोक गीत, लोक नृत्य, लोक वाद्य कहा जा सकता है। जैसे–जैसे मानव का विकास होता गया वैसे वैसे वाद्यों का सृजन होता चला गया और वह उनके विकास के लिए सदैव प्रयासरत रहा है।

वेदों के काल का निश्चित समय निर्धारण नहीं हो सका है किन्तु सर्वसम्मति से वैदिक काल प्रायः ईसा पूर्व 5000 वर्ष के लगभग माना गया है। भारतीय संगीत की नींव इसी युग में मानी गई है। वेद मंत्रों के संग्रह को संहिता कहा गया है, ये संहिता चार है ।

1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद
3. सामवेद 4. अथर्ववेद

ऋग्वेद

ऋग शब्द ऋच धातु से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है स्तुति करना या प्रार्थना करना प्रस्तुत संहिता में स्तुति मंत्रो का संग्रह है, प्रत्येक मंत्र छंन्दोबद्ध है।

यजुर्वेद

यजु शब्द यजु, यज धातु से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है पूजा करना। जो मंत्र यज्ञों में काम आते हैं उन्हे यजु संहिता या यजुर्वेद कहा जाता है। ये मंत्र छन्दोबद्ध नही है।

सामवेद

साम का शाब्दिक अर्थ है गान अथवा स्वर, मिमांशा सूत्र में लिखा है"– गीतिषु – सामख्या अर्थात गीत के लिए साम शब्द का प्रयोग किया गया है।

अथर्ववेद

अथर्व संहिता में उन मंत्रों का संग्रह है जो शान्ति देने वाले है, और जिन्हें ब्रह्मा ने जीवों की रक्षा के लिए बनाया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संगीत का आधार देवी, देवता, यज्ञ, गन्धर्व है। भारतीय धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत में भी संगीत का उल्लेख मिलता है।

रामायण काल में सभी प्रकार के बाजों की संज्ञा आतोद्य थी तत् अवनद्ध, घन, सुषिर इन चारों प्रकार के वाद्यों का साधारण नाम 'आतोद्य' है। रामायण स्वयं गेय तथा पाठ्य का सुन्दर निदर्शन है। राम के जन्म पर राजा दशरथ द्वारा बाजा वालों को बुलाकर बाजा बजाने का निर्देश देना, कुश और लव का तंत्री द्वारा मधुर स्वर तथा लय में रामायण कथा गाकर सुनाना, रावण का

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सामगान के माध्यम से शिव की अराधना करना व वीणा वादन में सिद्ध हस्त होना आदि। महाभारत युग में संगीत शास्त्र को मुख्यतः गान्धर्व शास्त्र कहा गया है। संगीत शब्द का प्रयोग नहीं है। गान्धर्व गीत में कुशल थे ही नृत्य और वाद्य में भी पारंगत थे। महाभारत काल में समाज में गीत, वाद्य, नृत्य तीनों का प्रचुर प्रचार था। अर्जुन सामगान वादन और नृत्य तीनों जानते थे। कृष्ण द्वारा बांसुरी वादन इसका प्रमाण है यानि सभी दैविक व सामाजिक कार्यो में संगीत अभिन्न अंग बन गया था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पौराणिक काल अथवा सृष्टि के आदि देव शंकर द्वारा डमरू वादन, सरस्वती द्वारा वीणा वादन, कृष्ण द्वारा बांसुरी वादन वाद्यों की प्राचीनता का प्रमाण है।

भारतीय संस्कृति में शिव के डमरू को प्रारम्भ से ही स्वीकार किया गया है। उत्तराखण्ड में यही डमरू हुड़का नाम से प्रसिद्ध है। लालमणी मिश्र द्वारा लिखित भारतीय संगीत वाद्य में इसे अवनद्ध वाद्यों के अन्तर्गत माना गया है। यह एक प्राचीन वाद्य यंत्र है।

भरतकृत नाट्य शास्त्र में इसे हुडुक अथवा आउज के रूप में वर्णित किया गया है।

संजीवनी भाष्य पृष्ठ संख्या 689 में डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने आउज के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये है। "आऊज शब्द व्यत्पत्ति की दृष्टि से अतोद्य से बना है, अतोद्य प्रा0 आयोज्ज–आउज्ज अमर कोष में वादित आतिद्य को पर्याय माना है। नाट्य शास्त्र में भी अतोद्य शब्द से सब बाजों को ग्रहण किया है।

"संगीत रत्नाकर" में लिखा है कि बाजों के स्थानीय नाम न जानने वाले कुछ लोग आवाज को ही (जो आउज के रूप में है) हुड़का का ही पर्याय मानते हैं। इस दृष्टि से आवाज़ बनाने वाले लोग आउजी और हुडुकिये एक हुए।

जायसी और चित्रावली दोनों में आऊज या हुड़का का पृथक उल्लेख किया गया है डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल के मत में आउज ढोल जैसा मढ़ा हुआ वाद्य होना चाहिए ।

मानसोउल्लास में हुड़का को अवनद्ध वाद्यों के अन्तर्गत माना है।

संगीत परिजात में (2,69,70) में अवनद्य वाद्यों में हुडका को भी लिया गया है।

संगीत रत्नाकर में इसकी बनावट के विषय में लिखा गया है। किन्तु आज वर्तमान युग में हुडुका उत्तराखण्ड का सर्वाधिक लोकप्रिय वाद्य है तथा सभी सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रयोग में लाया जाता है। हुड़का उत्तराखण्ड के स्थानीय जागर, देवी देवताओं के जागर के साथ ही विभिन्न उत्सवों, लोक गीतों, लोक नृत्यों में प्रयुक्त होने वाला वाद्य है। देवताओं के अवतरण करने से पहले समस्त देवताओं पवित्र स्थानों, मंदिरों मुख्य तीर्थ स्थान एवं वहां वास करने वाले देवताओं का आवाहन कार्य सिद्धि हेतु किया जाता है।

विभिन्न प्रकार के हुड़के एवं हुड़के की नाली

हुडके की बनावट व आकार

हुड़का का मुख्य भाग लकड़ी का बना होता है जिससे अन्दर से खोखला कर दिया जाता है। लकड़ी वाले भाग को स्थानीय बोली में नाली कहते है। नाली का निर्माण कुछ विशेष लकड़ी से किया जाता है इसके लिए बरौ, खिन अथवा खिनर की लकड़ी विशेष मानी जाती है। खिन की लकड़ी के लिए पुराने लोक वादकों का कहना है कि

"खिनौं का हुडुक। दैण पुड़ हो बानरौक, बॉ पुड़ हो जंगूरौक्। जभत कै तौ हुड़क बाजौल्, उ इलाकाक् डंडरी बिन न्यूतियै नाचा लागाल्।"

अर्थात् खिन की लकड़ी की नाली से निर्मित हुड़का व दाई ओर की पुड़ी बन्दर की खाल से निर्मित हो और बाई पुड़ी लंगूर की खाल से। ऐसे हुडके में जब जगरिये के हाथ से थाप पड़ेगी तो उस क्षेत्र के जितने भी डंगरिये है बिना निमंत्रण दिये ही नाचने लगेंगे। हुड़का की नाली का निर्माण करने वाले कारीगर चुनेड़ा कहलाते है ये लोग कुमाऊँ के असकोट के पास चुनैडा गांव में रहते थे। मैदानी क्षेत्रों में हुड़का की नाली को बेर या मली की लकड़ी से बनाया जाता है।

वादन शैली अथवा बजाने का तरीका

हुड़की को कंधे पर लटकार बीच से कपड़े की पट्टी को डोरी से बाँध दिया जाता है, बजाते समय कपड़े की पट्टी का खिचाव हुडुके के पुडे व डोरी पर पडता है जिससे इसकी आवाज संतुलित की जाती है इसके लिए

वादक को हुडके की पुडी पर अथवा थाप की लय पर विशेष ध्यान देना होता है। हुड़का धार्मिक गीत जागर लगाने का प्रमुख वाद्य है। विभिन्न देवताओं के अवतरण के लिए भिन्न भिन्न तालों का प्रयोग किया जाता है ये तालें विलम्बित व द्रुत दोनों लय में होती है। हुडुके के बोलों को शास्त्रीय संगीत तालों से जोड़े तो जैसे–

धा धीं ऽ ता तीं ऽ धा धीं ऽ ता तीं ऽ

पहले विलम्बित तथा देवता के अवतरित होते ही ताल की लय पुनः द्रुत हो जाती है और ताल के बोलों में अन्तर आ जाता है। जैसे–

धा धीं ना धा तू ना
धा धीं ना धा तू ना

जागर में हुडुके के साथ काँसे की थाली की संगत भी की जाती है।

अनुभवी हुड़का वादक तालों को विभिन्न रूपों में बदल बदल कर बजाता है। जिससे वादन में नवीनता आती है। विभिन्न प्रकार की गमक का प्रयोग भी वादक द्वारा किया जाता है। वादक आठ मात्रा की ताल, छः मात्रा की ताल, दस मात्रा की ताल में विविधता लाकर सौन्दर्य बढ़ा लेता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. ताल वाद्यों का लोक संगीत में महत्व ।
2. ताल वाद्यों की पौराणिकता एवं ऐतिहासिकता।
3. ताल वाद्यों की बनावट का महत्व।

शोध प्रविधि

1. लोक कलाकारों के साक्षात्कार।
2. ग्रामीण इलाकों में भ्रमण।
3. लोक ग्रन्थों का पठन पाठन।

भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही वाद्यों का प्रयोग होता रहा है। वैदिक काल से ही देवी देवताओं से अधिक प्रभावित रहा है। प्राचीन धार्मिक अवशेष, शास्त्रीय ग्रन्थ, वैदिक कालीन वाद्य तथा मोहन जोदडो की खुदाई इसके प्रमाण है। भारत वर्ष के आदि देव शंकर जी द्वारा "डमरू" सरस्वती द्वारा "वीणा" कृष्ण द्वारा "मुरली" इसके प्रमाण है। संगीतज्ञ ने आध्यात्मिक परम्परा को विकसित किया तथा देवों द्वारा वाद्य का निर्माण आदि कथाएं जैसे समुद्र मंथन में वीणा, शिव के क्रोध को शान्त करने के लिए डमरू का निर्माण, नारद ऋषियों द्वारा अन्य वाद्यों का निर्माण, कथाएं वाद्यों की एतिहासिकता को दर्शाती है।

निष्कर्ष

वाद्य संगीत का आभूषण है यह कहा जा सकता है कि संगीत यदि पुष्प है तो वाद्य उसकी सुगन्ध है संगीत यदि शरीर है तो वाद्य उसकी आत्मा। जिस प्रकार पुष्प सुगन्ध के बिना अधूरा है ठीक उसी प्रकार लोक संगीत वाद्य के बिना अधूरा है। किसी भी प्रस्तुति का आरम्भ यदि वाद्य से किया जाय और अन्त भी वाद्य द्वारा हो तो वह प्रस्तुति आकर्षक लगती है। इससे सिद्ध होता है कि जिस प्रकार काव्य में सुन्दरता के लिए अलंकारो का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार लोक वाद्यों का प्रयोग लोक गीतों की सुन्दरता के लिए किया जाता है। उपर्युक्त विवरण से सिद्ध होता है कि कुमाऊँनी लोक संगीत के लिए हुड़का प्रमुख वाद्य है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हुड़का का प्रदर्शन होते ही उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गढ़वाल का लोक संगीत एवं वाद्य – डॉ0 सिवानन्नद नौटियाल, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
नाट्य शास्त्र – भरत मुनी
भारतीय संगीत वाद्य– डॉ0 लालमणी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
भारतीय संगीत का इतिहास– उमेश जोशी, मानसरोवर प्रकाशन उ०प्र०
भारतीय इतिहास में संगीत– भगवत सरण शर्मा, संगीत मंदिर प्रकाशन उ०प्र०
प्राचीन भारत में संगीत– डॉ0 धर्मावती श्रीवास्तव, विद्या प्रकाशन वाराणसी
संगीत चिन्तामणी– आचार्य डॉ0 बृहस्पति एवं श्रीमती सुमित्रा कुमारी, संगीत कार्यालय , हाथरस
संगीत रत्नाकर, पं0 शारंगदेव।
भारतीय संगीत के विविध आयाम, डॉ0 रेणु राजन, अंकित पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2010।